आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (16-30 नवंबर, 2026)

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बुवाई और अन्य प्रथाएँ

फसल मौसम 2026-27

मौसम के आंकड़ों के अनुसार, गेहूं और जौ की समय पर बुआई के लिए तापमान अनुकूल है। कई इलाकों में बुआई शुरू हो चुकी है, और किसान समय, मेहनत और बीज की बचत के लिए ज्यादातर मशीनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। किसानों को सलाह दी जाती है कि बेहतर पैदावार पाने के लिए, बुआई के समय और खेत की स्थिति के हिसाब से गेहूं या जौ की किस्मों का चुनाव सावधानीपूर्वक करें। हमेशा किसी भरोसेमंद स्रोत से ही बीज खरीदें।

सामान्य सुझाव

✓ अपने क्षेत्र और खेती की स्थिति के अनुसार सबसे उपयुक्त किस्म का चयन करें।

✓ कंबाइन से कटे धान के खेतों में फसल अवशेषों की उपस्थिति में हैप्पी सीडर या स्मार्ट सीडर का उपयोग कर के सीधे गेहूं/जौ की बुवाई की जा सकती है।

✓ समय पर बुवाई करें और देरी से बचें, ताकि फसल पकने के समय पड़ने वाली गर्मी से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

✓ अन्य क्षेत्रों/ज़ोनों की किस्में न उगाएँ, इससे फसल में रोगों का जोखिम बढ़ सकता है।

✓ अधिकतम उपज के लिए उर्वरक, सिंचाई, खरपतवारनाशी और फफूंदनाशी का संतुलित एवं उचित उपयोग करें।

✓ पानी बचाने और लागत में कटौती के लिए खेतों की समय पर और विवेकपूर्ण सिंचाई करें।

उत्तरी, पूर्वी, मध्य और प्रायद्वीपीय भारत भारत में समय पर, बुआई के लिए गेहूं की किस्में

क्षेत्र	क़िस्म
एनडब्ल्यूपीजेड: पंजाब, हरियाणा, राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिम यूपी	एचडी 3386, पीबीडब्ल्यू 826, एचडी 3406, डीबीडब्ल्यू 222, डीबीडब्ल्यू 187
एनईपीजेड: पूर्वी यूपी, बिहार, बंगाल, झारखंड	डीबीडब्ल्यू 386, एचडी 3388, डीबीडब्ल्यू 187, पीबीडब्ल्यू 826, एचडी 3411, डीबीडब्ल्यू 222, एचडी 3249, एचडी 3086
सीजेड: एमपी, गुजरात, राजस्थान (उदयपुर एवं कोटा)	एचआई 1699, एनडब्ल्यूएस 2194, एचआई 1650, जीडब्ल्यू 513, जीडब्ल्यू 547, डीबीडब्ल्यू 187, एचआई 1636, एमएसीएस 6768, जीडब्ल्यू 366
पीजेड: महाराष्ट्र, कर्नाटक	डब्ल्यूएच 1306, एनएसडब्ल्यू 2222, डीबीडब्ल्यू 443, एकेएडब्ल्यू 5100, पीबीडब्ल्यू 891, एमपी 1378, एमएसीएस 4100, डीडीडब्ल्यू 48 (इयूरम), एचआई 8826 (इयूरम)

बुआई का समय, बीज दर और उर्वरक प्रयोग: भारत में गेहूं की फसल विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों और उत्पादन स्थितियों में उगाई जाती है। बुआई के समय में क्षेत्र दर क्षेत्र और अलग-अलग उत्पादन परिस्थितियों में थोड़ा अंतर होता है। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।

गेहूं की फसल के लिए क्षेत्रवार बुआई बीज दर एवं उर्वरक की मात्रा

क्षेत्र	बुआई की स्थिति	बीज दर	उर्वरक की खुराक और प्रयोग का समय
एनडब्ल्यूपीजेड और एनईपीजेड	सिंचित, समय पर बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	150:60:40 किग्रा एनपीके/हे (बुवाई के समय बेसल के रूप में 1/3 एन और पूर्ण पी और केऔर शेष एनको पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में विभाजित करें)
सीजेड, पीजेड	सिंचित, समय पर बोया गया	100 किग्रा/हैक्टर	120:60:40 किग्रा एनपीके/हे (1/3 एन और पूर्ण पी और के बुआई के समय बेसल के रूप में और शेष एन पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में)

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी का छिड़काव)

• बहुशाकनाशी प्रतिरोधी फलारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) सहित विविध खरपतवार वनस्पतियों के नियंत्रण के लिए, बुवाई के 0-3 दिन बाद 60 ग्राम/एकड़ की दर से पाइरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का अकेले या पेंडिमेथालिन 30 ईसी 2.0 लीटर/एकड़ के साथ छिड़काव करें।

या

 बुआई के 0-3 दिनों के भीतर, 'एक्लोनिफेन + डिफ्लुफेनिकन + पाइरोक्सासल्फोन' (मैटिनो मोर) के रेडी-मिक्स मिश्रण का 800 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करें। इसके लिए 150-200 लीटर पानी का उपयोग करें।

• कठिया गेहूं में पाइरोक्सासल्फोन आधारित शाकनाशी के प्रयोग से बचें।

• जिन क्षेत्रों में फसलें शाकनाशी के प्रति संवेदनशील हैं, वहां गेहूं में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए बुआई के लगभग 35 दिन बाद इनमें से किसी एक का प्रयोग करें: 'क्लोडीनाफोप 15 WP' (160 ग्राम/एकड़), 'पिनोक्साडेन 5 EC' (400 मिली/एकड़), या 'सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 WDG' (13.5 ग्राम/एकड़)।

• चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए, बुआई के लगभग 35 दिन बाद इनमें से किसी एक का छिड़काव करें: '2,4-D' (500 मिली/एकड़), 'मेटसल्फ्यूरॉन 20 WP' (8 ग्राम/एकड़), 'कार्फेन्ट्राजोन 40 DF' (20 ग्राम/एकड़), या 'हैलाक्सिफेन + फ्लुरोक्सीपायर 40 EC' (200 ग्राम/एकड़)।

• किसानों को फसल पर छिड़काव तब करना चाहिए जब मौसम साफ हो, यानी बारिश न हो रही हो और कोहरा या ओस आदि न हो।

सिंचाई

• किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली सिंचाई करें।

दीमक नियंत्रण

• दीमक प्रभावित क्षेत्रों में, दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरोपाइरीफॉस 0.9 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज (4.5 मिली उत्पाद मात्रा/किग्रा बीज) से बीज उपचार करें। थियामेथोक्साम 70डब्लूएस (कूजर 70 डब्लूएस) 0.7 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज (4.5 मिली उत्पाद मात्रा/किग्रा बीज) या फिप्रोनिल (रीजेंट 5एफएस 0.3 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज या 4.5 मिली उत्पाद मात्रा/किग्रा बीज) से बीज उपचार भी बहुत प्रभावी है।

• फसल पर छिड़काव तब करें जब मौसम साफ हो, यानी बारिश न हो, और कोहरा या ओस आदि न हो।

भारत में समय पर बुवाई के लिए जौ की किस्में

क्षेत्र	उत्पादन परिस्थितियाँ	किस्म
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र) जिसमें राज्य शामिल हैं: पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभागों को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झाँसी संभाग को छोड़कर, जम्मू-कश्मीर के कुछ भाग (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश के कुछ भाग (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र)	सिंचित समय पर बुवाई (10-25 नवम्बर)	चारा जौ: डीडब्लूआरबी 137, बीएच946 बिना छिलके वाला जौ: पीएल 891, डीडब्लूआरबी 223 दोहरी उपयोगिता वाला जौ: आरडी 2715, आरडी 2552 माल्ट जौ: डीडब्लूआरबी 219, डीडब्लूआरयूबी 52, आरडी 2849, डीडब्लूआरबी123, डीडब्लूआरबी101, डीडब्लूआरबी182
उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र जिसमें राज्य शामिल हैं: पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और पूर्वोत्तर राज्यों के मैदानी क्षेत्र	सिंचित समय पर बुवाई (10-25 नवम्बर)	चारा जौ: डीडब्लूआरबी 137, एचयूबी 113 बिना छिलके वाला जौ: के 1149, एनडीबी 943 दोहरी उपयोगिता वाला जौ: आरडी 2715, आरडी 2552
मध्य क्षेत्र, जिसमें राज्य शामिल हैं: मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभाग) और उत्तर प्रदेश का		चारा जौ: डीडब्लूआरबी 137, आरडी 2899 बिना छिलके वाला जौ: पीएल 891, डीडब्लूआरबी 223

झाँसी संभाग		दोहरी उपयोगिता वाला जौ: : आरडी 2715, आरडी 2552
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र & उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	लवणता एवं क्षारीयता (10-25 नवम्बर)	चारा जौ: एनडीबी1173, आरडी 2794, आरडी 2907

जौ के लिए बीजोपचार संबंधी सुझाव

कीट/रोग	उपचार
दीमक	150 मिलीलीटर क्लोरपायरीफॉस (20 ईसी) को 5 लीटर पानी में घोलें और इस घोल से 100 किलोग्राम बीज का उपचार करें।
आवृत कंड रोग	थिरम को बाविस्टिन/विटावैक्स के साथ 1:1 के अनुपात में मिलाकर 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। वैकल्पिक रूप से, टेबुकोनाज़ोल का प्रयोग 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें।
जैव उर्वरक	बीजोपचार के लिए एजोटोबैक्टर + पीएसबी का 10-20 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से प्रयोग करने की भी सिफारिश की जाती है।

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी का छिड़काव)

विभिन्न प्रकार के खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए, बुआई के 0-3 दिनों के भीतर 1.5-2.0 लीटर/एकड़ की दर से पेंडीमेथालिन 30 EC का छिड़काव करें।

जौ की फसल के लिए क्षेत्रवार बीज दर एवं उर्वरक मात्रा

क्षेत्र	बुवाई की परिस्थितियाँ	बीज दर	उर्वरक की मात्रा एवं प्रयोग का समय
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हेक्टेयर	चारा एवं बिना छिलके वाले जौ के लिए 60:30:20 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर दें माल्ट जौ के लिए 90:30:20 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर दें (आधी नत्रजन तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय बेसल (आधार) खाद के रूप में दें। शेष आधी नत्रजन पहली सिंचाई पर दें।)
मध्य क्षेत्र एवं प्रायद्वीपीय क्षेत्र	सिंचित, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हेक्टेयर	चारा एवं बिना छिलके वाले जौ के लिए 60:30:20 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर दें (आधी नत्रजन तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय बेसल (आधार) खाद के रूप में दें। शेष आधी नत्रजन पहली सिंचाई पर दें।)

17.11.26
(ओमवीर सिंह)
निदेशक (क)